Bundelkhand Journal of Academic Research

सिकंदरा स्थित सम्राट अकबर के मकबरे के स्थापत्य का ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ. विनय कुमार पटेल
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय बांदा, उत्तर प्रदेश।
(**Corresponding Author:** vinay.net2012@gmail.com)
https://doi.org/10.5281/zenodo.21787817

सारांश

भारतीय इतिहास में मुगल काल को राजनीतिक स्थिरता, प्रशासनिक विकास, सांस्कृतिक समन्वय और स्थापत्य कला के उत्कर्ष का युग माना जाता है। मुगल शासकों ने अपनी सत्ता, धार्मिक दृष्टिकोण, कला–प्रेम और सांस्कृतिक चेतना को केवल प्रशासनिक संस्थाओं के माध्यम से ही नहीं, बल्कि भव्य स्थापत्य स्मारकों के निर्माण द्वारा भी अभिव्यक्त किया। इन स्मारकों में महल, किले, मस्जिदें, उद्यान और मकबरे विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मुगल स्थापत्य कला ने भारतीय, फारसी, मध्य एशियाई और स्थानीय क्षेत्रीय कला परंपराओं के समन्वय से एक नवीन स्थापत्य शैली को जन्म दिया, जिसकी विश्व स्तर पर विशिष्ट पहचान बनी। सिकंदरा (आगरा) स्थित अकबर का मकबरा मुगल स्थापत्यकला की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्मारक है। इसका निर्माण सम्राट अकबर ने अपने जीवनकाल में प्रारंभ करवाया था। उसने अपनी अंतिम विश्राम स्थली के लिए आगरा के निकट सिकंदरा क्षेत्र का चयन किया। यह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण और राजकीय महत्व के कारण उपयुक्त माना गया। अकबर की मृत्यु अक्टूबर 1605 ई. में होने के बाद उसके उत्तराधिकारी नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर ने निर्माण कार्य को पूरा करवाया। इस प्रकार यह स्मारक अकबर और जहाँगीर दोनों के काल की स्थापत्य परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है।

आलेख सूचना			
	प्राप्त: 28 अप्रैल, 2026	**स्वीकृत:** 17 मई, 2026	**प्रकाशित:** 30 जून, 2026
	सारणी: 00	**चित्र एवं ग्राफ:** 07	**स्रोत एवं संदर्भ:** 11
	मुख्य शब्द: मकबरा, सिकंदरा, अकबर, स्थापत्य, मीनार, बहिष्ताबाद, सांस्कृतिक समन्वय।		

परिचय एवं पृष्ठभूमि: उत्तर प्रदेश के आगरा में सिकंदरा स्थित सम्राट अकबर का मकबरा मुगल स्थापत्य कला का एक बेजोड़ नमूना है। यह इमारत केवल एक समाधि स्थल नहीं है, बल्कि अकबर की सर्वधर्म समभाव (सुलह–ए–कुल) की विचारधारा और उसकी सांस्कृतिक दृष्टि का वास्तुकलात्मक प्रतिबिंब है। अकबर का मकबरा पारंपरिक मुगल वास्तुकला से कई मायनों में अलग और विशिष्ट है। अधिकांश मुगल मकबरों (जैसे हुमायूँ का मकबरा या ताजमहल) पर एक विशाल केंद्रीय गुंबद होता है, लेकिन अकबर के मकबरे में कोई विशाल गुंबद नहीं है। यह बौद्ध विहारों की शैली से प्रेरित एक पिरामिडनुमा इमारत है। यह मकबरा एक विशाल वर्गाकार चारबाग के केंद्र में स्थित है। बाग को पानी की नहरों और रास्तों द्वारा चार मुख्य हिस्सों में बांटा गया है, जो इस्लामी स्थापत्य में 'पैराडाइज (जन्नत)' की अवधारणा को दर्शाते हैं। सिकंदरा स्थित यह मकबरा मुगल वास्तुकला के विकास के उस संक्रमणकालीन चरण को दर्शाता है, जहाँ लाल बलुआ पत्थर के विशाल निर्माण (अकबर कालीन) से सफेद संगमरमर की सूक्ष्म पच्चीकारी (शाहजहाँ कालीन) की ओर यात्रा शुरू हो रही थी।

मकबरे की स्थापत्य का विश्लेषण: मुगल सम्राट अकबर का चरित्र मिश्रित था, लेकिन उसका व्यक्तित्व विशिष्ट था। सम्राट अकबर (1556–1605 ई.) भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में से एक था। वह केवल एक शक्तिशाली विजेता और कुशल प्रशासक ही नहीं था, बल्कि कला, स्थापत्य, साहित्य और संस्कृति का महान संरक्षक भी था। सम्राट अकबर के शासनकाल में मुगल साम्राज्य ने राजनीतिक विस्तार के साथ–साथ सांस्कृतिक विकास की नई ऊँचाइयों को प्राप्त किया। उसने भारतीय समाज की विविधताओं को समझते हुए एक समन्वयवादी नीति अपनाई, जिसे सुलह–ए–कुल के नाम से जाना जाता है। उसकी यही व्यापक दृष्टि उसके द्वारा निर्मित स्थापत्य स्मारकों में भी

दिखाई देती है। फतेहपुर सीकरी, आगरा किला और सिकंदरा का मकबरा उसकी स्थापत्य दृष्टि और सांस्कृतिक विचारधारा के प्रमुख उदाहरण हैं। सम्राट अकबर का मकबरा उत्तर प्रदेश के आगरा से 4 मील पश्चिम में सिकंदरा नामक गाँव में 119 एकड़ के क्षेत्र में स्थित है (कोच, 1991)। यह मकबरा एक विशाल बगीचे के बीच में स्थित है, जो 4 ऊँची, युद्ध–प्राचीर वाली दीवारों से घिरा है। प्रत्येक दीवार के मध्य में 70 फिट ऊँचा एक भव्य प्रवेश द्वार है। पश्चिम की ओर स्थित मुख्य द्वार पर फारसी में एक शिलालेख है, जिसमें लिखा है कि, इस मकबरे का निर्माण सम्राट अकबर ने करवाया था।

अकबर का मकबरा उत्तर प्रदेश के आगरा से 4 मील पश्चिम में सिकंदरा नामक गाँव में 119 एकड़ के क्षेत्र में स्थित है। स्वयं अकबर ने अपने मकबरे का डिजाइन बनाया लेकिन पूर्ण नहीं करवा सका। अकबर का मकबरा हिंदुस्तान में मुगलों की संस्कृति और इतिहास को दर्शाती वास्तुकला की विभिन्न शैलियों के सम्मिश्रण का एक आदर्श उदाहरण है। यह मकबरा दिल्ली–आगरा मार्ग पर एक विशाल चारदीवारी वाले बगीचे में स्थित आंतरिक वास्तुकला का प्रतीक है। अकबर के मकबरे में हिंदू, ईसाई, इस्लामी, जैन और बौद्ध वास्तुकला शैलियों का एक उत्कृष्ट मिश्रण है, जो विभिन्न संस्कृतियों की सकारात्मकता का एक प्रतिष्ठित मिश्रण है (हॉवेल, 1904)।

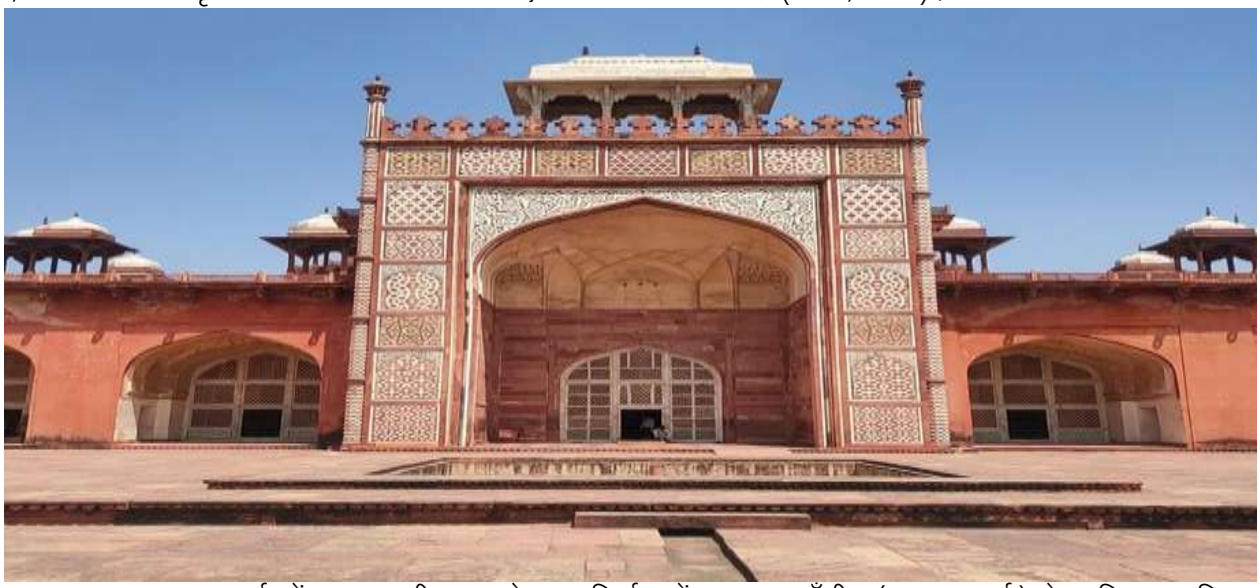

अक्टूबर 1605 ई. में अकबर की मृत्यु के बाद निर्माण में सम्राट जहाँगीर (1605–27 ई.) ने व्यक्तिगत रुचि का प्रदर्शन किया। 1613 ई.की घटनाओं का निर्माण देते हुए तुजुक–ए–जहांगीरी में जहांगीर लिखता है कि "मैं अपने पिता के मकबरे को देखने गए। जब हमें इस पवित्र यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ,तब हमने कब्रिस्तान पर बनी इमारत देखी परन्तु वह हमारी इच्छा के अनुकूल नहीं लगी। हमारी इच्छा थी कि, राहगीर उसे देखकर यह कहें कि ऐसी इमारत हमने संसार में और कहीं नहीं देखी है। इसका कारण यह था कि जिस समय यह बन रही थी उस समय दुर्भाग्य से खुसरू की घटना घटी थी और हम लाहौर चले गए तथा कारीगरों ने उसे अपने मन के अनुसार बना

डाला। फलतः सारा धन भी व्यय हो गया और तीन–चार वर्ष इसे बनने में लग गए। हमने आज्ञा दी कि अनुभवी कारीगर अन्य अनुभवी लोगों की सम्मति से निश्चित ढंग पर कई स्थानों पर नीवें डालें।"

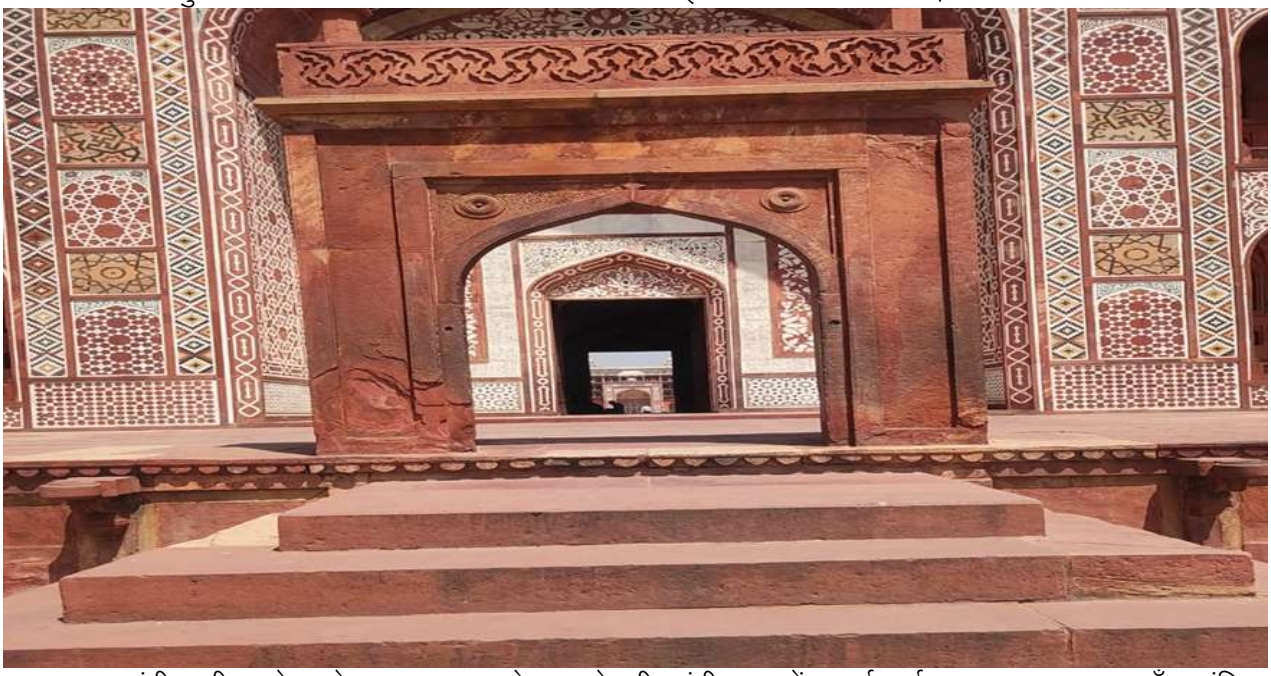

जहांगीर की आदेश के बाद अकबर के मकबरे की ऊंची इमारतें बनाई गई। यह मकबरा एक पाँच मंजिला स्मारक है जो पिरामिड जैसा दिखता है (माली, 2017)। इसमें चार द्वार हैं और मुख्य प्रवेश द्वार दक्षिणी द्वार है। मकबरे के चारों ओर अति सुंदर बाग लगाया गया तथा एक विशाल एवं ऊंचा दरवाजा सफेद पत्थर की मीनारों सहित बनाया गया। इस ऊंची इमारत पर 15 लाख रुपए खर्च हुए जो ईरान के पचास हजार तुमान और तूरान के 45 हजार खानी के बराबर होते हैं। मुगल सम्राट अकबर ने इसका नाम "बहिष्ताबाद" रखा था (कोच, 1991)।

अकबर के मकबरे के स्थापत्य कला की अनेक विशेषताएं दिखाई देती हैं। पहली मुख्य विशेषता यह है कि अकबर का मकबरा एक परंपरागत इमारत नहीं है। इसका तात्पर्य है कि, इसकी शैली अन्य इमारतों की शैली से भिन्न है। इसके निर्माण में कई नई चीजों का समावेश किया गया है। अकबर के मकबरे की दूसरी विशेषता यह है कि, इस पर गुंबद का निर्माण नहीं किया गया है, बल्कि उपरी मंजिल समतल है।

अकबर के मकबरे की तीसरी विशेषता यह है कि मकबरे के निर्माण कला में प्रथम बार मीनार का प्रयोग किया गया था। दक्षिणी द्वार पर चार मीनारें हैं। ऐसा माना जाता है कि अकबर अपने दक्षिण अभियान (1599 ई.) के दौरान चार मीनारों से प्रभावित हुआ था। इसके पहले केवल मस्जिद में ही मीनार को बनाया जाता था। अकबर के मकबरे की चौथी विशेषता यह है कि मकबरों की बनावट बौद्ध विहार जैसी है और इसका आकार पिरामिड के जैसा है (राधेश्याम, 2018)।

अकबर के मकबरे की एक अन्य विशेषता यह है कि अकबर का मकबरा एक विस्तृत एवं सुनियोजित उद्यान के मध्य में स्थित है। इस बाग की परिधि डेढ़ मील है और इसके चारों ओर दीवार घिरी हुई है। इसके चारों ओर प्रवेश द्वार हैं और सभी द्वार वैभवशाली हैं लेकिन इसका मुख्य प्रवेश–द्वार दक्षिण में सर्वाधिक आकर्षक है जिस पर संगमरमर का जड़ाऊ कार्य किया गया है। इसके प्रत्येक प्रवेश द्वार पर फारसी की पंक्तियां खुद ही हुई हैं, यह पंक्तियां अकबर के जीवन पर प्रकाश डालती हैं। इसके चारों ओर तथा चारों कोनों पर संगमरमर की एक–एक ऊँची मीनार है। प्रवेश द्वार पर कुशलतापूर्वक की गई पच्चीकारी इसकी शोभा बढ़ाती है। भूतल पर अकबर की वास्तविक कब्र संगमरमर की बनी हुई है जो कि एक पतली गैलरी के द्वारा पहुंचा जाता है। जबकि पहली मंजिल पर बनी कब नकली है तथा उन पर विभिन्न प्रकार के फूलों पत्तियां बनाए गए हैं। यहाँ पर ईश्वर के 99 नामों के साथ कब्र के सिरहाने 'अल्लाह–उ–अकबर' और पैरों की तरफ "जल्ले जलाल हूँ" के साथ हिंदू स्वास्तिक एवं ईसाईयों का क्रास भी अंकित है (हॉवेल, 1904)। कला विशेषज्ञ पर्सी ब्राउन के अनुसार "अब तक इस प्रकार की एक भी मीनार भारतीय स्थापत्य कला में प्रयुक्त हुई दिखाई नहीं देती है।"

सम्राट अकबर का मकबरा पांच मंजिली इमारत है जिसमें प्रत्येक ऊपर की मंजिल नीचे की मंजिल की अपेक्षा आकार में छोटी होती गई है। सबसे निचली मंजिल का आकार 325 X 325 फिट है। चौकोर आकार वाली दूसरी मंजिल पहली मंजिल की तुलना में आकार में छोटी है। प्रत्येक कोने पर आठ अष्टकोणीय स्तंभों पर आधारित 5.18 मीटर व्यास वाली आठ स्तंभयुक्त समाधियाँ दिखाई देंगी। प्रत्येक कोने पर कुल 23 खंड बने हैं। अकबर के मकबरे की तीसरी मंजिल दूसरी मंजिल से भी छोटी है। तीसरी मंजिल पर चार समाधियाँ हैं जिनकी माप दूसरी मंजिल की समाधियों के समान है। समाधियों में नीले, पीले और हरे रंग की टाइलों का इस्तेमाल किया गया है। फर्श के किनारों पर जालियाँ लगी रेलिंग हैं जिन पर त्रिभुज, तारा, स्वस्तिक आदि विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ बनी हैं।

अकबर के मकबरे की चौथी मंजिल (27.16 मीटर) चौकोर आकार की है और इसके चारों ओर मेहराब एवं खंभों पर समाधि स्थल हैं। इस मंजिल में एक गुप्त मंजिल है। गुप्त मंजिल में प्रवेश करने के लिए सीढ़ी लगी हैं और फिर एक संकरे रास्ते से होकर गुजरना पड़ता है। इस गुप्त मंजिल में पाँच गलियारे हैं जो एक–दूसरे को समकोण पर काटते हैं। सबसे ऊपरी मंजिल सबसे छोटी (21.34 मीटर) है जो संगमरमर से बनी है। इस मंजिल के चारों तरफ 27.16 X 2.74 मीटर मठ के समान आकृति हैं (हॉवेल, 1904)। इसे दूर से देखने पर यह बौद्ध बिहार की तरह प्रतीत होता है।

यूरोपीय कला विशेषज्ञ फर्गुसन का कहना है कि "मकबरे की ऊपरी मंजिल की डिजाइन में सिरे पर एक गुम्बद की व्यवस्था अवश्य रही होगी। इस गुम्बद के बिना यह स्मारक दबा हुआ एवं अर्थहीन सा लगता है.....इमारत की ऊँचाई अब कोने के मण्डपों से 100 फुट से कुछ ही अधिक है। अगर केन्द्रीय गुम्बद 20–40 फुट और ऊँचा होता तो यह नीचे के आधार से उचित अनुपात में होता। यह मकबरा जैसी बारीक बनावट का है, वैसा ही सुंदर एवं आनुपातिक बनाने के लिए केन्द्रीय कक्ष बड़ा बनाने की आवश्यकता प्रतीत होती है। अगर यह ऐसा बना होता तो भारतीय मकबरों में इसे ताज के बाद, दूसरा स्थान दिया जाता।'' क्लाविद् पर्सी ब्राउन ने फर्ग्यूसन से असहमति व्यक्त करते हुए लिखा है कि ''यह मकबरा ऊपर की मंजिल सहित जैसा बना है, वैसा पूर्ण है। इसकी खुली हई छत और सुरुचिपूर्ण बनावट इस इमारत के लिए उपयुक्त ही है।"

मुगल सम्राट अकबर के मकबरे में अकबर के अतिरिक्त कई अन्य लोगों की समाधि स्थल भी है। मुगल सम्राट जहाँगीर के भाई एवं अकबर के तीसरे पुत्र दानियाल मिर्जा को यहीं दफनाया गया है। अकबर की पुत्री शक्र–उन–निसा बेगम को भी यहीं दफनाया गया है। अकबर की सबसे बड़ी पुत्री खानम सुल्तान बेगम को भी यहीं दफनाया गया। मुगल सम्राट औरंगजेब की सबसे बड़ी संतान जेब–उन–निसा बेगम को भी यहीं दफनाया गया है। ऐसा माना जाता है कि अंग्रेजी लेखिका फ्लोरा एनी वेबस्टर स्टील को भी यहीं दफनाया गया था (हॉवेल, 1904)।

मुगल सम्राट औरंगजेब (1658–1707 ई.) के समय जाटों के विद्रोह का नेतृत्व जाट राजाराम (1680–86 ई.) ने किया, जो अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना चाहता था। उसने कई अन्य राजाओं के साथ मिलकर आगरा किले पर हमला किया और कीमती पत्थर, धातुएँ, आभूषण आदि लूट लिए। उसने अकबर के मकबरे पर भी हमला किया और उसे लूट लिया। विदेशी यात्री निकालो मनूची के अनुसार, उसने सिकंदरा में सम्राट अकबर की हड्डियाँ खोदकर जलाकर मकबरे को भी क्षतिग्रस्त कर दिया था। चूँकि जाटों ने अकबर के मकबरे को लूटकर क्षतिग्रस्त कर दिया था, इस कारण भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन (1898–1905 ई.) ने प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम, 1904 के तहत 1905 ई. में अकबर के मकबरे की मरम्मत और संरक्षण के लिए जीर्णोद्धार किया।

अकबर के मकबरे में जो गैर परंपरागत शैली का प्रयोग किया गया है, यही इसकी प्रमुख विशेषता है (अहमद, 2016)। इसमें न पूर्ण रूप से इस्लामी शैली न तो हिंदू शैली और न तो पूर्ण रूप से बौद्ध शैली का प्रयोग किया गया है, बल्कि तीनों का समिश्रण दिखाई देता है। यह निश्चित रूप से एक ऐसे व्यक्ति का मकबरा है जो अपनी धार्मिक सहिष्णुता के लिए प्रसिद्ध है। सिकंदरा में स्थित सम्राट अकबर का मकबरा केवल ऐतिहासिक धरोहर ही नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अमूल्य अंग है। आज भी यह देश–विदेश के पर्यटकों, इतिहासकारों, स्थापत्य विशेषज्ञों तथा शोधार्थियों के लिए आकर्षण और अध्ययन का प्रमुख केंद्र है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा

इसके संरक्षण के प्रयास किए जा रहे हैं, किंतु पर्यावरणीय प्रभाव, प्रदूषण तथा बढ़ते पर्यटन के कारण इसके संरक्षण की चुनौती निरंतर बनी हुई है। अतः इस धरोहर के संरक्षण के लिए आधुनिक वैज्ञानिक उपायों के साथ–साथ जन–जागरूकता और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास भी आवश्यक है (प्रसाद, 2011)।

निष्कर्ष : निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सिकंदरा स्थित सम्राट अकबर का मकबरा भारतीय इतिहास, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक समन्वय का अनुपम प्रतीक है। यह स्मारक न केवल मुगल स्थापत्य कला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है, बल्कि सम्राट अकबर की उदार विचारधारा और भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी परंपरा का भी सशक्त प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए इसका संरक्षण और गहन अध्ययन हमारी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय विरासत को समझने एवं सुरक्षित रखने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है[11]।

स्रोत एवं संदर्भः

1. कोच, एबे (1991). मुगल आर्किटेक्चर, दिल्ली, 1991, पृष्ठ–70
2. हॉवेल, ई. (1904). आगरा एंड दी ताज, बम्बई 1904, पृष्ठ–98
3. माली, डॉ नारायण (2017). मध्यकालीन भारत का इतिहास, जयपुर, 2017, पृष्ठ–747
4. कोच, एबे (1991). मुगल आर्किटेक्चर, दिल्ली, 1991, पृष्ठ–70
5. प्रो. राधेश्याम (2018). मध्यकालीन प्रशासन, समाज एवं संस्कृति, इलाहाबाद 2018, पृष्ठ–365
6. हॉवेल, ई. (1904). आगरा एंड दी ताज, बम्बई 1904, पृष्ठ–98
7. हॉवेल, ई. (1904). आगरा एंड दी ताज, बम्बई 1904, पृष्ठ–98
8. हॉवेल, ई. (1904). आगरा एंड दी ताज, बम्बई 1904, पृष्ठ 98–99
9. अहमद, इम्तियाज (2016). मध्यकालीन भारत, पटना, 2016, पृष्ठ–513
10. प्रसाद, ईश्वरी (2011). मध्यकालीन भारत का संक्षिप्त इतिहास, लखनऊ, 2011, पृष्ठ–41
11. स्वयं के द्वारा सिकंदरा में जाकर गहन सर्वेक्षण और अध्ययन किया गया।

=====

आलेख उद्धरित करें :	पटेल, विनय कुमार (2026)। सिकंदरा स्थित सम्राट अकबर के मकबरे के स्थापत्य का ऐतिहासिक विश्लेषण। बुंदेलखंड जर्नल ऑफ अकादमिक रिसर्च (बीजेएआर), वॉल्यूम–2, अंक–2, अप्रैल–जून, 2026, पृष्ठ 42–47। https://doi.org/10.5281/zenodo.21787817